भगवान श्रीकृष्ण, दिव्य प्रेम के अवतार

शाम्भवी क्रिश्चन द्वारा लिखित

भगवान श्रीकृष्ण, भगवान श्रीविष्णु के अवतारों में से एक हैं। दिव्य ज्ञान प्रदाता के रूप में उनकी पूजा की जाती है। उदाहरण के लिए, श्रीभगवद्गीता में भगवान श्रीकृष्ण की कई सिखावनियाँ निहित हैं। यह महाकाव्य विश्व के अब तक के सर्वाधिक प्रभावशाली ग्रन्थों में से एक है। श्रीभगवद्गीता, मानवजाति की आध्यात्मिक व नैतिक प्रज्ञान की धरोहर की आधारशिला है।

भगवान श्रीकृष्ण के जन्म को 'कृष्ण जन्माष्टमी' कहा जाता है। भारतीय पंचांग के अनुसार कृष्ण जन्माष्टमी श्रावण माह के कृष्णपक्ष की अष्टमी तिथि को होती है। कृष्ण जन्माष्टमी की रात्रि को 'मोहरात्रि' कहा जाता है और इसे वर्ष की तीन सबसे शुभ रात्रियों में से एक माना जाता है। इन तीनों रात्रियों का हर एक क्षण मंगलमय है, इसलिए इस समय हम जो भी आध्यात्मिक अभ्यास करते हैं, उनकी शक्ति कई गुना बढ़ जाती है।

भगवान श्रीकृष्ण के जन्म की रात्रि के अगले दिन 'गोपालकाला' का पर्व मनाया जाता है जिसे 'दही हाण्डी' भी कहते हैं। यह पर्व भगवान श्रीकृष्ण के बालरूप के प्रति आदर की अभिव्यक्ति है। जब भगवान श्रीकृष्ण बालक थे तब उनकी उपस्थिति में घटे चमत्कारों व शरारतों की कई कहानियाँ हैं। तथापि, इन सभी कहानियों से कई गहन शिक्षाएँ ग्रहण की जा सकती हैं। भगवान श्रीकृष्ण की "शरारत" प्रतीत होने वाली लीला के पीछे हमेशा ही कोई महान उद्देश्य होता था; उनकी शरारतें तो बस दिखावा थीं, ऐसे तरीक़े जिनके माध्यम से वे लोगों को सृष्टि के गूढ़ रहस्य समझाते थे या उन्हें मोक्ष प्रदान करते थे। जो बालकृष्ण से प्यार करते थे और उनके प्रति समर्पित थे, उन्हें परिणामस्वरूप प्रेम प्राप्त हुआ—और यह था भगवान श्रीकृष्ण का प्रेम जो शुद्धातिशुद्ध है, दिव्यातिदिव्य है, अत्यन्त सम्मोहक, अपरिमित व अनन्त है।

उल्लास से भरा 'दही हाण्डी' का यह पर्व उन कहानियों को दर्शाता है जिनमें बालकृष्ण को अपनी मैया के मटकों में से दही और माखन चुराना बहुत पसन्द था और मैया दही व माखन को बालकृष्ण की पहुँच से दूर, छिपाकर कभी रख ही नहीं पाती थीं। 'गोपालकाला' पर लोग दही से भरी मटकियों या हाण्डियों को काफ़ी ऊँचाई पर टाँग देते हैं। युवा और किशोर-युवक एक-दूसरे के कन्धों पर चढ़कर एक सीढ़ी जैसी बना लेते हैं और फिर मटकियों तक पहुँचकर उन्हें तोड़ देते हैं तथा लड़कियाँ उनका उत्साह बढ़ाने के लिए भगवान श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन करने वाले उत्साहवर्धक गीत गाती हैं।

अब आगे बढ़ते हैं, जहाँ वयस्क रूप में भगवान श्रीकृष्ण, कुरुक्षेत्र की युद्धभूमि पर महान योद्धा अर्जुन के गुरु एवं मार्गदर्शक थे। वहाँ श्रीभगवद्गीता का ज्ञान प्रदान करते समय, भगवान श्रीकृष्ण इस धरती पर अपने अवतार लेने का उद्देश्य अर्जुन को समझाते हैं :

> यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
> अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्॥
>
> परित्राणाय साधूनां विनाशाय च दुष्कृताम्।
> धर्मसंस्थापनार्थाय सम्भवामि युगे युगे॥
>
> हे भरतवंशी अर्जुन, जब-जब धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, मैं प्रकट होता हूँ।[१]
>
> सज्जनों की रक्षा करने, दुष्टों का विनाश करने और धर्म की स्थापना करने के लिए मैं हरेक युग में जन्म लेता हूँ।[२]

युगों-युगों से जिज्ञासु, भगवान श्रीकृष्ण के प्रति, उनकी सिखावनियों और उनकी जीवन-गाथाओं के प्रति आकर्षित हुए हैं। भगवान श्रीकृष्ण की बाँसुरी की धुन विशेष आकर्षण का स्रोत रही है। भगवान श्रीकृष्ण के जीवनकाल में वृन्दावन की गोपियाँ, उनकी मुरली के मधुर सुरों से इतनी मन्त्रमुग्ध हो जाया करती थीं कि जब भी वे बनसी के स्वरों को सुनतीं, तो उस समय वे जो भी कार्य कर रही होतीं, उसे छोड़कर, उन स्वरों के पीछे-पीछे चल देतीं। रासलीला, दिव्य प्रेम की लीला आरम्भ हो जाती।

चुम्बकीय सामर्थ्य वाला यह प्रेम केवल उन्हीं लोगों तक सीमित नहीं था जो भौतिक रूप से भगवान श्रीकृष्ण के सान्निध्य में थे। सदियों से भगवान के भक्तों ने अपने हृदय में इस प्रेम को उमड़ता हुआ महसूस किया है और उनकी मुरली के संगीत को अपने अन्तर में सुना है। ऐसे ही अनुभवों से प्रेरित होकर महान लेखकों, कवियों, गायकों, संगीतकारों, नर्तकों, कलाकारों, कथाकारों, विद्वानों और सन्तों ने भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति में अत्यन्त उत्कृष्ट कृतियों की रचना की है। और केवल इन्होंने ही नहीं, सभी संस्कृतियों व सभ्यताओं के लोगों ने उनकी दिव्य उपस्थिति का अनुभव किया है, उससे प्रेरणा प्राप्त की है व सुख पाया है।

सिद्धयोग पथ पर हम भगवान के कई नामों का संकीर्तन करते हैं। फिर भी, भगवान श्रीकृष्ण के सम्मान में किए जाने वाले नामसंकीर्तन में हमेशा ही कुछ ख़ास बात होती है। मैंने देखा है कि जैसे ही लोग नामसंकीर्तन में भगवान श्रीकृष्ण के किसी भी नाम को सुनते हैं, उनके चेहरों पर एक बड़ी-सी

मुस्कराहट आ जाती है। सिद्धयोग पथ पर भगवान श्रीकृष्ण की स्तुति में गाए जाने वाले नामसंकीर्तनों में से एक है 'कृष्ण गोविन्द'। इस संकीर्तन की धुन एक पारम्परिक भारतीय धुन है जो राग भैरवी पर आधारित है। यह राग परमप्रिय के प्रति, अपने प्रियतम के प्रति भक्ति और ललक के रसों को जगाता है। जन्माष्टमी पर्व के लिए सर्वाधिक उपयुक्त इस नामसंकीर्तन में, हम किशोररूप में श्रीकृष्ण का महिमागान करते हैं :

कृष्ण गोविन्द गोविन्द गोपाल।
कृष्ण मुरलीमनोहर नन्दलाल॥

हे भगवान श्रीकृष्ण, हे गौओं के दिव्य पालक!
हे भगवान श्रीकृष्ण, हे गौओं के संरक्षक!
हे नन्द के प्रिय लाल,
आप अपनी मुरली से हृदय को हर लेते हैं!

---

[१] श्रीभगवद्गीता, ४.७; स्वामी स्वरूपानन्द द्वारा भाषान्तर, *Srimad-Bhagavad-Gita* [कलकत्ता: अद्वैत आश्रम, १९७५], पृ. ९९; अंग्रेज़ी अनुवाद © एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन।

[२] श्रीभगवद्गीता, ४.८; स्वामी कृपानन्द द्वारा सम्पादित, *Jnaneshwar's Gita: A Rendering of the Jnaneshwari* [ऑल्बनी, न्यूयॉर्क : SUNY प्रेस, १९८९], पृ. ४८।

© २०२२ एस. वाय. डी. ए. फ़ाउन्डेशन®। सर्वाधिकार सुरक्षित।